वृत्तपत्राचे नांव :– नव भारत टाईम्स
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– मुंबई
वृत्तपत्र पान क्र :– 6
दिनांक :–30/3/2010

गीता नीति शास्त्र भी है, समाज शास्त्र भी

आर. डी. अग्रवाल ॥

गीता को लोग इतना महत्वपूर्ण क्यों मानते हैं ? असल में इस एक ही ग्रंथ के अनेक पहलू हैं। यह प्रत्येक समाज के लिए एक पृथक समाज शास्त्र है, तो राजनायिकों के लिए 'राजनीति शास्त्र। यह संतों, महात्माओं, ज्ञानियों व जिज्ञासुओं के लिए अध्यात्म का ग्रंथ है। भक्तों के लिए भक्ति मार्ग का निर्देशक। और पूंजीवाद, समाजवाद तथा साम्यवाद जैसी व्यवस्थाओं के लिए नीति सूत्रों का संकलन।

इसीलिए यह एक कालजयी ग्रंथ बन गया। इसीलिए पश्चिमी देशों के विद्वान भी मुक्त कंठ से इसकी प्रशंसा करते हैं। यह ग्रंथ गुरु- शिष्य की परंपरा पर आधारित है।

गीता किसी संप्रदाय विशेष के लिए नहीं है, बल्कि संसार के समस्त उन मनुष्यों के लिए है जो अपने जीवन को समझना चाहते हैं। इस में सर्व कालीन कर्म, ज्ञान तथा भक्ति योग के बारे में चर्चा है। इसके चौथे अध्याय में श्री कृष्ण कहते हैं कि संयत इंद्रिय होकर ज्ञान प्राप्ति में लगा हुआ श्रद्धावान प्राणी ही ज्ञान प्राप्त करता है और परम शांति को प्राप्त होता है। आगे कहते हैं, तत्व को जानने वाले ज्ञानी पुरुषों से निष्कपट भाव से दंडवत प्रणाम तथा सेवा करके उस ज्ञान को जानना चाहिए।

हम किताबें होते हुए भी पाठशाला जाते हैं विद्या अध्ययन के लिए, लेकिन इसी प्रकार गीता के इस आदेश का पालन नहीं कर पाते कि तत्वज्ञानी की शरण में जाकर 'ज्ञान' प्राप्त करें। इसी कारण हम उस 'ज्ञान' से प्राय: वंचित रह जाते हैं।

मनुष्य को सत् और असत् का भेद बताने वाली गीता का उद्भव वन में स्थिति किसी निर्जन आश्रम में किसी आचार्य द्वारा दिए गए उपदेश से नहीं हुआ। न यह हिमालय की कंदराओं में बैठे किसी तपस्वी की वाणी से फूटा। और न ही यह किसी गुरुकुल में दीक्षा देने वाले किसी कुलपति का भाषण है, बल्कि यह तो युद्ध के मैदान में दो विरोधी सेनाओं के बीच खड़े हो कर दिया गया उपदेश है। इस तरह यह जीवन सागर के पार उतरने के लिए कर्म ज्ञान है।

निष्काम कर्म का संदेशवाहक गीता 'फल की प्राप्ति की कामना नहीं करने की बात कह कर अनासक्ति की ओर ले जाती है। कृष्ण कहते हैं, न तो कभी अपने आपको अपने कर्मों के फलों का कारण मानो, न ही कर्म न करने में कभी आसक्ति हो।

वे कर्म करने को कहते हैं। अकर्मण्य की तरह बैठने से मना करते हैं और अपना कर्त्तव्य पूरा करने को कहते हैं। वे कहते हैं, सुख-दुख, जय-पराजय, हानि-लाभ का विचार किए बिना युद्ध के लिए युद्ध करो अर्थात कर्म के लिए कर्म करो। ऐसा करने से कोई पाप नहीं लगेगा। यह है जीवन-समर का सत्य जिसे हमें हृदयंगम करना चाहिए।

और अंत में तो, कुछ भी यदि समझ में नहीं आता हो तो एक बहुत ही सरल व सहज बात कह दी श्रीकृष्ण ने – ढेर सारे धर्म हैं, कर्त्तव्य हैं, फर्ज हैं –इन सभी का परित्याग करके मेरी शरणागत हो जाओ। यह भक्ति का मूल दर्शन है। यानी ज्ञान मार्गी के लिए ज्ञान और भक्ति मार्गी के लिए समर्पण का सूत्र। कर्म मार्गी के लिए संघर्ष और कर्त्तव्य का दर्शन और अध्यात्मवादी के लिए अनासक्ति का निर्देश।

इस प्रकार से गीता संपूर्ण जीवन का, उसके सभी पक्षों का मार्ग दर्शक है। अलग-अलग क्षेत्रों के विद्वानों ने इसकी अलग-अलग ढंग से अलग-अलग संदर्भों में व्याख्या की है। यहां तक की स्वामी सहजानंद सरस्वती ने गीता पर अपनी प्रसिद्ध टीका में सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए गीता के महत्व को रेखांकित किया है। फैसले का क्षण नामक अध्याय में हर निर्णय को वक्तिगत लाभ-हानि की बजाय देशकाल के प्रति जवाबदेही को ध्यान में रखकर लेने की सलाह दी गई है। कहते हैं, 'ज्ञान बिना नर सोहहिं ऐसे, लवण बिना बहु व्यंजन जैसे' –उसी प्रकार गीता के ज्ञान के बिना हमारे ज्ञान में कमी रह जाती है।